(संकाय संवर्धन कार्यशाला (FDP) 2024 शोधपत्र–संयचन)

शोध-प्रविधि के विविध आयाम

संस्कृत–विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवम् प्रत्यायन परिषद्
द्वारा प्रत्यायित "ए" ग्रेड विश्वविद्यालय)

ज्ञान पथ, समरहिल, शिमला–5

निर्मल पब्लिशिंग हाउस
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय तृतीय द्वार के सामने
कुरुक्षेत्र - 136 119 (हरियाणा)
फोन: 09996690938, 9416660197
ई-मेल: nirmalpublishinghouse@gmail.com

शोध-प्रविधि के विविध आयाम

© संपादक, 2025

ISBN: 978-93-49187-26-9

अक्षरसंयोजक : आदिल प्रिंटोग्राफिक्स, दिल्ली-110 092

मुद्रक : ग्लोरियस प्रिंटर्स, दिल्ली

हिमाचल प्रदेश ि
विभाग द्वारा सप्त
प्रविधि कार्यशाल
कार्यशाला (FDP)
गया था जिसमें '
आयाम' इस क
विभिन्न पहलुओं
जिसमें बताया
विषय या समस्य
और गम्भीर तरी
यह आधुनिक
विस्तार करने का
शोध पद्धति किस
के बारे में जानक
और उसका वि
उपयोग की जाने
प्रक्रियाओं का व
ऐसी प्रकिया है
अपने अध्ययन
करते है, जिससे
प्राप्त कर सकें
तथ्य को प्रकाश
करने का आशय
में बिखरे हुए त
समाहार भी किय
उस समस्त स
संग्रह आवश्यक
विषय से संबंधि
शोध की ठीक
होगा, शोध का
लगन–नहीं होंगी
का रहस्य उद्घा
उपनिषद्कार के

39. शोध की विभिन्न विधियां — 290
– डॉ. लावणे विजय भास्कर

40. तमिल के आधुनिक बाल साहित्य – एक झलक — 294
– डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

41. लोकसभा चुनावों में महिला मतदाताओं एवं प्रत्याशियों की सक्रियता बरेली मंडल के संदर्भ में — 300
– डॉ. राजेंद्र कुमार

42. लोक साहित्य : लोक संस्कृति की अभिव्यंजना — 307
– डॉ. हेम राज

43. Exploring Absurdity and Uncertainty in Samuel Beckett's 'Waiting for Godot' — 313
— Dr. Poonam Choudhary

44. Research Methodology — 321
— Dr. Vineeta & Mr. Harish Ram

45. Navigating Hurdles, Seizing Prospects: Women Entrepreneurs in Uttarakhand's MSME Landscape — 328
— Bipin Kumar

46. A Note on S-Recurrent Kaehler Space — 339
— Dr. Rajeev Kumar Singh

47. Biopolymers Synthesis and Characterization — 345
— Virpal Singh

48. Basic Overview of National Education Policy (Nep) 2020 and Primary School Education in Punjab — 363
— Dr. Kuldeep Singh

49. A Study of Indian Research System in The Role of Indian National Education Policy 2020 — 381
— Vipin Uniyal

50. Significance of Dual Identity in Jhumpa Lahiri's *The Namesake* — 389
— Dr. Vanita Supehia

40

तमिल के आधुनिक बाल साहित्य – एक झलक

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

साहित्य समाज का प्रतिविंब है। बालक भावी युवा पीढ़ि है, किसी भी समाज एवं देश का भविष्य है। बालक कच्ची मिट्टी के समान हैं, जिन्हें हम मनचाहे रूप में ढाल सकते हैं। इस महत्त्व पूर्ण कार्य में परिवारवाले, समाज, के साथ – साथ साहित्यकारों की एहम भूमिका है। परिवार, समाज, तथा देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए सुसंकृत बाल एवं युवा पीढ़ि के निर्माण में साहित्य का योगदान अतुलनीय है। बाल साहित्य हमारी संस्कृति, स्वधर्म, परंपरा, मान्यता, समाज, रीति–रिवाज, नैतिक एवं जीवन मूल्य, आदि का परिचायक है। समृद्ध बाल साहित्य, बच्चों में आत्मविश्वास, सहिष्णुता, दया, करुणा, ममता, कर्तव्य परायणता, दृढ़ संकल्प, संयम, शांति, राष्ट्र भक्ति, परोपकार, बड़ों के प्रति आदर और सम्मान, आदि मूल्यों को प्रदान करने वाला मनोहर व अनमोल खजाना है। समृद्ध तमिल साहित्य में, आधुनिक बाल साहित्य के अमूल्य योगदान पर प्रकाश डालने का लघु प्रयास इस लेख में किया गया है।

ऐसी मान्यता है कि तमिल बाल साहित्य का उद्‌भव, संघम साहित्य से ही प्रारंभ हुआ है। तोलकापियम, अगनानूरु, सिलपदिकारम, मणिमेगालै, भक्ति साहित्य, औवयार साहित्य, आदि विभिन्न कालक्रमों के साहित्य में बाल कविताएं एवं बालोपयोगी कहानियाँ, पहेलियाँ, सूक्तियाँ, दोहे, आदि उपलब्ध है। हालांकि स्वतंत्र विधा के रूप में इसका विकास आधुनिक युग में ही प्रारंभ हुआ है। आधुनिक युग के, अर्थात स्वतंत्रता पूर्व युग के, कविमणि देसिय

विनायगमपिल्लै, राष्ट्र कवि सुब्रमण्य भारती, भारतिदासन, स्वतंत्रयोत्तर युग के म.प. पेरियसामी तूरन, अल. वल्लियप्पा, वर्तमान युग के पूवण्णन, सुकुमारन, म. कमलवेलन, एम.एल. तंगप्पन, .कोदंडाम, रेवती, आयशा रा.नटराजन, सेल्ल गणपति, कुल. कदिरेसन, मु. मुरुगेश, की. सेतुपति, बालमारती, उदयशंकर, आदि अग्रणी बाल साहित्यकारों द्वारा पल्लवित और पुष्पित है। वर्तमान युग के तमिल बाल साहित्य के लिए इन साहित्यकारों की देन पर संक्षिप्त जानकारी देने का अल्प प्रयास इस लेख में किया गया है।

म.प. पेरियसामि तूरन (1908–1987): आपने तमिल में सर्वप्रथम विश्वकोश और बाल विश्वकोश संग्रहित करने में एहम भूमिका निभाई। बाल साहित्य की कविता, कहानी, उपन्यास, आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाई। 'ओलै किली', तंबियिन तिरमै', 'नाट्यराणी', कड़किट्टि मुड़किट्टि', 'मंजल मुट्टई', 'निला पाट्टि', आदि बाल कहानियाँ, 3 कविता संग्रह, 'मायकल्लन', 'सूरपुली', 'कोल्लि मलैकुल्लन', आदि अनेक बाल उपन्यास लिखें हैं।

अल. वल्लियप्पा (1922–1989): आप आधुनिक बाल साहित्य के पितामह के नाम से जाने जाते हैं। आप बाल साहित्य के अनमोल एवं अद्‌भुत साहित्यकार हैं। 'आलूककु पादी' बाल कहानी आपकी प्रथम रचना है जोकि 'शक्ति' पत्रिका में प्रकाशित हुई। आपने 2000 से भी अधिक बाल कविताओं की रचना किया हैं। सरल और सहज भाषा में प्रभावोत्पादक शैली में लिखना आपकी विशिष्टता है। आपके 'मामबलामां मामबालं'य 'वट्टमान तट्टु तट्टु निराय लट्टु' आदि अनेक बाल कविताएं अत्यधिक प्रख्यात है। आपने बाल साहित्य की किसी भी विधा को अछूता नहीं छोड़ा। आपने कुल 11 कविता संग्रह, 12 उपन्यास, 9 निबंध संग्रह, 1 नाटक, 1 शोध ग्रंथ, 2 अनूदित ग्रंथ, 1 संग्रह ग्रंथ, की रचना किए हैं। इसमें 2 ग्रंथ केंद्र सरकार और 6 ग्रंथ तमिलनाडु राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं। 'नमदु नदिगल' ग्रंथ का अनुवाद 14 भाषावों में किया गया है। आपकी समग्र रचनावों को राष्ट्रीकृत किया गया है।

आपने तमिल बाल साहित्य को नई ऊंचाई प्रदान की। आपके समय में तमिल बाल साहित्य अपने चरमोत्कर्ष में होने के कारण आपके युग को 'तमिल बाल साहित्य का स्वर्ण युग' माना जाता है। आप इंडियन बैंक में कार्यरत होने के साथ साथ 'बलर मलार', 'डमारम', 'संगु', आदि बाल पत्रिकावों के अतिथि संपादक रहे। 'पून्चोलइ' बाल पत्रिका के संपादक रहे।

सेवनिवृत्ति के पश्चात 'गोकुलं' बाल पत्रिका के संपादक रहे। आपने 1950 में बाल साहित्य के संपादकों को एकजुट करके 'बाल साहित्य लेखक संघ' की स्थापना किया। आप 8 बाल साहित्य सम्मेलनों के सफल आयोजन किए हैं। उन्होंने 1957–1987 तक बाल दिवस के दौरान कुल 664 बाल साहित्य ग्रंथों के विमोचन किए हैं। अपने कार्यकाल में बाल पत्रिकावों के माध्यम से आपने बच्चों के लिए प्रतियोगितावों का आयोजन करके प्रतिभावान बच्चों को पहचानकर उन्हें विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया है। वर्तमान युग के अनेक बाल सहित्यकार आपकी शिष्य परंपरा के हैं।

आप 1963 में लखनो में हुए अखिल भारतीय बाल लेखक सम्मेलन में पदक व पुरस्कार प्राप्त किए हैंस आप 'पिल्लै कवियरसु', 'कुलंदई इलक्कीय मुन्नोंडि', 'मललै कवि सेम्मल' आदि विभिन्न उपाधियों के हकदार हैं। तमिल बाल साहित्य के आकाश में आप सदा प्रकाश देनेवाले अमर सूरज हैं।

एम.अल. तंगप्पा (1934 –2018): आप पुदुचेरी के सेवा निवृत अध्यापक एवं तमिल प्राध्यापक रहे। आप परंपरागत कविता, निबंध, बाल साहित्य, अनुवाद, आदि क्षेत्रों में अपने सफल लेखनी चलाई। आपने 50 से अधिक रचनाएं किए हैं। आपके 'सोलाक्कोलई वोम्मै' कविता के लिए 2010 के बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। तमिल संघं कवितवों के अंग्रेजी अनुवाद आपने किया है। इसकेलिए साहित्य अकादमी पुरस्कार आपको दुबारा प्राप्त हुआ। 'सोलाक्कोलई बोम्मै' कविता संग्रह तमिलनाडु के ग्रामीण परिवेश की पहचान है। यह बच्चे और प्रकृति से जुड़कर रचित अत्यंत सरल तुकबंदी शब्दों से युक्त रोचक कवितावों का संगम है। इस संग्रह में कुल 15 कविताएं हैं। यह कविताएं क्रमेण शिशु, 5–10 साल के बच्चों के लिए, लंबी कविताएं 12 साल के बालकों के लिए हैं। अर्थात बच्चों के उम्र के अनुरूप कविताबों की लंबाई तय की गई है। मनोरंजन, स्पष्ट उच्चारण, गिनती, सप्ताह के दिनों के नाम, विभिन्न पशु–पक्षी व पेड़–पौधे से परिचय, तर्क क्षमता का विकास, आदि इन कवितावों का विषय है।

डॉ. को. मा. गोदनडमः आप तमिलनाडु के राजपालयम में जन्मे अप्रतिम महान सहित्यकार हैं। बच्चों के लिए 100 से भी अधिक रचनाएं किए हैं। आपके 'आरण्य कांडम', 'एलिचिगरम', 'कुरिंजामपू', 'जन्मभूमिगल', आदि रचनाएं पश्चिमी घाट के श्रमिक जीवन पर आधृत है। आपके 'आरण्य कांडम'

लघु कथा संग्रह के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। मानव में भेद भाव नहीं है, सब को जीने का समान अधिकार है। यही आपकी रचनावों के मूल उद्देश्य एवं संदेश है। वन को कथानक बनाकर, पशु–पक्षी व पेड़–पौधे की जानकारी, पहाड़ी जीवन शैली का परिचय आपके साहित्य का लक्ष्य है।

आपके 'काट्टकुल्ले इसैविला' कहानी संग्रह के लिए 2011 के बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस संग्रह में कुल 16 कहानियाँ हैं। इन कहानियों के माध्यम से वन के बारे में अद्भुत अनसुनी जानकारी, वन रक्षा की आवश्यकता, वन्य जीव–जन्तु एवं पशु–पक्षियों की जानकारी, आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

रेवती उर्फ डॉ. ई.एस. हरिहरनः अल. वल्लियप्पा के उपदेशानुसार आप मात्र बाल साहित्य में ध्यान देने लगे। अपने नाम को रेवती बदलकर बच्चों के लिए लिखने लगे। आप 'गोकुलम' बाल पत्रिका के संपादक के रूप में 11 साल, 'बाल लेखक संघ' के मुख्य पदों में कई साल, 'पूनतलिर' बाल पत्रिका में 'वान्डु मामा' के लिए सहायक संपादक के रूप में कार्य भार संभाले। केंद्र सरकार और तमिलनाडु राज्य सरकार ने आपको 35 से अधिक पुरस्कारों से नवाजा है। आपके 'कोडी काट्ट वंदवन' बाल उपन्यास अत्यंत लोकप्रिय है। इस उपन्यास का अनुवाद 9 भाषावों में किया गया है।

आपके कहानी संग्रह 'पवलं तंद परिसु' के लिए 2013 के बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस संग्रह में कुल 5 कहानियाँ हैं। पेड़–पौधे और वन रक्षा के महत्त्व, बुराई पर अच्छाई की जीत, मैत्री भाव का महत्त्व, नदी की रक्षा, आदि विषयों पर बल दिया गया है। संग्रह के कुल 5 कहानियों में 'स्त्री पात्र' अहम भूमिका निभाती है। स्त्रीयों को चतुर, पूर्वनियोजित, निडर, सबक सिखानेवाली, प्यार व ममता के स्वरूप, आदि आदर्श, सशक्त व समर्थ रूपों में चित्रित किया गया है। सत्तारुद असमर्थ राजवों द्वारा पीड़ित प्रजा का चित्रण, वन सुरक्षा की जिम्मेदारी, आदि विषयों पर अद्भुत प्रकाश डाला गया है।

आइशा इरा. नटराजन : आपने अपने 'नवीन विक्रमादित्तन कदैगल' कहानी संग्रह के लिए 2014 के बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त किया है। कहानी संग्रह में चिकित्सा क्षेत्र की प्रगति और चमत्कार, अंधविश्वास और वास्तविक वैज्ञानिक सत्य, आदि की जानकारी हमें प्राप्त है। इस कहानी संग्रह में कुल 8 कहानियाँ है। 'विक्रम और वेताल ' कहानी को नए सिरे में

लिखने का अनुपम प्रयास लेखक ने बखूबी किया है। डाइबटीस, रब्बीस, मलेरिया, हृदय रोग, कैंसर, एड्स आदि जानलेवा बिमारियों के कारण, इनकी रोकथाम, चिकित्सा, इन विषयों से संबंधित वैज्ञानिकों की जीवनी आदि का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।

किरुन्गइ सेतुपति : आपके 'सिरगु मुलैत्त यानइ' कविता संग्रह के लिए 2018 के बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आप पुदुचेरी के सरकारी महाविद्यालय के प्राध्यापक हैं। आप कवि, लघुकहानीकार, नाटककार, शोध निर्देशक, वक्ता, जैसे बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार है। बाल साहित्य के लिए आपके योगदान अमूल्य है। 'सिरगु मुलैत्त यानइ' कविता संग्रह में कुल 9 भाग है। इसमें माँ की ममता, बाल मनोविज्ञान, प्रश्नोत्तरी, मनोरंजन, आदि से संबंधित कविताएं हैं।

एस.बालभारती : आप कविता, कहानी, लघुकथा, उपन्यास, पत्रकारिता, समाज सेवा, आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपना अमिट छाप छोड़ा है। अपनी रचनावों के माध्यम से आपने बच्चों के आडिसम बीमारी के प्रति जागरूकता उत्पन्न किया है। आपके 'मरपाच्छी सोन्न रगसियम' बाल उपन्यास के लिए आपको 2020 के बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह उपन्यास तत्काल समाज में व्याप्त बाल योन उत्पीड़न, योन शोषण, इससे बचने का तरीका, गुड टच, बेड टच, आदि पर बच्चों में जागरूकता पैदा करता है। उपन्यास के बीच बीच में बच्चों के लिए आवश्यक सामान्य ज्ञान भी प्राप्त है। यह उपन्यास वास्तव में समय की मांग है।

मु. मुरुगेश : आप बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार हैं। कविता, हाइकु, बाल साहित्य, आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आप बच्चों के लिए अब तक 5 संग्रह लिखे हैं। आपकी बाल रचनाएं 'गुंडु गिल्ली तविट्टु कुरुवियुम तंगरासु ममावुम', 'परक्कुम पप्पी पूवुम अट्टईकत्ती राजावुम', 'नल्लमत्तु पाट्टिक्कु नावल मरम सोन्न कदय' को विशिष्ट पुरस्कार प्राप्त है।

आपके 'मगल सोन्न उलगिन मुदल कदय' कहानी संग्रह 2021 के बाल साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत है। इसमें कुल 18 कहानियाँ हैं। इसमें निशक्त जानवरों द्वारा सशक्त चतुर जानवरों पर विजय चित्रित है। वर्तमान बच्चों की रुचि के अनुरूप पुरानी कहानियों का नवीन रूप में रोचक शैली में प्रस्तुत किया है।

जी मीनाक्षीरू आप पत्रकारिता के क्षेत्र से 27 सालों जुड़ी हुई हैं। 'राणी' पत्रिका के संपादक, 'मंगयर मलार' पत्रिका के सह–संपादक, के रूप में कार्यरत हैं। लघु कथा, निबंध, आदि क्षेत्रों में आपने अपना अमिट छाप छोड़ा है। आपके अनेक रचनावों के लिए विभिन्न पुरस्कार प्राप्त है। आपके 'मल्लिकाविन वीडु', कहानी संग्रह के लिए 2022 के बाल सहित पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसमें कुल 16 कहानियाँ हैं। इन कहानियों के माध्यम से बच्चों के सफल जीवन के लिए आवश्यक जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है।

निष्कर्ष : वास्तविक जीवन के विकट परिस्तिथियों को पारकर, जीवन में अपने लक्ष्य की ओर आगे बदने के लिए, उत्तरोत्तर विकास के लिए बाल साहित्य का संवर्धन समय की मांग है। बदलते मशीनी युग की मोबाईल व रोबाटिक संस्कृति से बचाने के लिए बच्चों को बाल साहित्य से परिचित काराना हमारा चरम कर्तव्य है। अंततः हम यह कह सकते है कि संघम युग से वर्तमान युग तक अपनी सुदूर लंबी यात्रा के दौरान, तमिल साहित्य समय के अनुरूप अपना स्वरूप बदलकर बाल तथा युवा पीढ़ी को अपनी ओर खींचकर, अपने अस्तित्व एवं विशिष्ट स्थान बरकरार रखने में निस्संदेह सफलता हासिल की है।

संदर्भ

1. www.wikepidia.com
2. www.chuttiulagam.com
3. www.tam.wikisource.org
4. www.tamilvu.org
5. www.pachumittai.com
6. www.dailythanthi.com
7. www.jeyamohan.in
8. www.keetru.com
9. www.tamizhbooks.comwww.panuval.com
10. www.encyclopedia.com
11. www.academi.edu
12. www.tamilcareerindia.com
13. www.seragu.com
14. www.pothunalamd .com